श्री वेङ्कटेशाचार्य विरचित

श्री वेदान्त देशिक गद्यम्

जयत्यखिल दुर्वादि तिमिरौघ दिवाकरः
श्रित ताप प्रशमनस् त्रय्यन्तार्य सुधाकरः

जय जय महा देशिक निगमान्त देशिक

विश्वालेङ्कार विश्वामित्र पवित्र गोत्र कलशोदधि कौस्तुभ

विबुध वैरि वरूधिनी वित्रासि वेङ्कटेश विमल घण्टावतार

अनन्त सदृशानन्त गुणाकरानन्त गुरुनन्दन

शोभन चरित सुलोचनोत्तम तोतारम्बा लोचन चकोर चन्द्र

बहुमुख मख तोषित पुण्डरीकाक्ष पुण्डरीकाक्ष सूरिपुण्य फल भूत

वत्स कुल तिलक वरदाचार्य वीक्षित

ब्रह्मवित्प्रवर अनन्तार्य विहित ब्रह्मोपदेश

वादि हंस बलाहक मातुल रामानुजाचार्य सकाश लब्ध सकल वेद वेदाङ्ग तर्क मीमांसा शब्द वेदान्त शास्त्र जात

विंशत्यब्द विश्रुत नानाविध विद्य

स्वपदाम्बुज ध्यान सुप्रसन्न तुरङ्ग मुख मुख विनिस्सृत लाला सुधापान लब्ध सार्वज्ञ

ज्ञान भक्ति वैराग्य वात्सल्य सौशील्य औदार्य चातुर्य माधुर्य स्थैर्य धैर्य कारुण्य क्षमा
शमदमाद्यनन्त कल्याण गुण भूषण

शुभकुलप्रसूत तुल्य गुण लक्षण प्रेयसी सह चरित सकल धर्म

हयवदन देवनाथ अच्युत गोपाल रघुवीर रण पुङ्गव वरद नरहरि यथोक्तकारि दीप प्रकाश देहळीश

वेङ्कटेश रङ्गेश पक्षीश हेतीश यतीश रमा क्षमा गोधा विषय स्तोत्र सुधा रञ्जित सहृदय बुध जन हृदय

परदेवता पारमार्थ्यवेदि पराशर व्यास प्राचेतस वैशम्पायन बोधायन शुक शौनक भरद्वाज शाण्डिल्य हारीत प्रभृति परम ऋषि समधिक वैभव

साङ्ख्य सौगत चार्वाक शाङ्कर यादव भास्कर काणाद कौमारिलमततमो निवारण दिवाकर

पाषाण्ड द्दमषण्ड खण्डन चण्ड पवन

वेङ्कटाचल वारणाचल गोपनगर अहीन्द्र नगर श्रीमुष्ण चित्रकूट श्रीकुम्भ
कोण श्री रङ्ग श्रीवनाद्रि कुरुकापुरी प्रभृत्यष्टोत्तर शत विष्णु दिव्यस्थान
सेवा सन्तोष रचित पदविन्यास पवित्री कृत पृथिवी मण्डल

यतिपति यामुनार्य नाथमुनि फणिति परिष्कार पाञ्चरात्र रहस्य निक्षेप सच्चरित्र
गीतार्थ संग्रह रक्षा शतदूषणी सर्वार्थ सिद्धि तत्वमुक्ता कलाप तत्वटीका
तात्पर्य चन्द्रिका न्याय परिशुद्धि न्याय सिध्दाञ्जन अधिकरण दर्पण अधिकरण
सारावळि संकल्प सूर्योदय यादवाभ्युदयाद्यनेक दिव्य प्रबन्ध निर्मान सामर्थ्य
संदर्शन सन्तुष्ट श्री रङ्ग नाथ दिव्याज्ञा लब्ध वेदान्ताचार्यपद

तद्वल्लभा कृपा संप्राप्त सर्व तन्त्र स्वतन्त्रता बिरुद

संदर्शन मात्र निरस्त समस्त दुर्वादि सङ्घ

त्रिंशद्वारं श्रावित शारीरक भाष्य

छात्रजन निबध्द जैत्रध्वज प्रसाधित दशदिशा सौध

एकयामिनी यामनिर्मित पातुका सहस्र श्रवण सञ्जात विस्मय रङ्गेश विश्राणित
कवितार्किक सिंह समाख्या विख्यात वैदग्ध्य

संसार दावानल सन्तप्त सञ्जीवन सरसा मृत परीवाहरूप सारसार
रहस्यत्र्यसार अभयप्रदानसार गुरुपरंपरासार सार सङ्क्षेप सार
सङ्ग्रहोपकार सङ्ग्रह विरोधिपरिहार प्रधानशतक परमपद सोपान

तत्वपदवी रहस्य पदवी तत्वनवनीत रहस्य नवनीत तत्वमातृका
रहस्य मातृका तत्व सन्देश रहस्य सन्देश रहस्य सन्देश विवरण रहस्य
शिखामणि तत्वत्र्य चुलक रहस्यत्र्य चुलक मुनिवाहन भोग अञ्जलि वैभव
संप्रदाय परिसुध्दि हस्तिगिरि महात्म्य परमत भङ्ग तत्वरत्नावळी
तत्वरत्नावळी प्रतिपाद्य सङ्ग्रह रहस्य रत्नावळी रहस्य रत्नावळी हृदय
रञ्जित रमासहाय नित्यबहुमत

पाञ्च रात्र प्रतिपादिताभिगमनोपादानेज्या स्वाध्याय योगरूप पञ्च काल
परायण

सम्यक् प्रदर्शित षडङ्गाष्टाङ्ग योग

पराङ्कुश परकाल भक्तिसार कुलशेखर श्री विष्णु चित्त मुनिवाहनादि मुनिवर दिव्य प्रबन्ध तात्पर्य
प्रपञ्चन परितोषित बुधजन

त्रिरत्नगाथा श्रीवैष्णव दिनचर्यार्थ पञ्चक सङ्ग्रह श्रीचिन्ह माला
गीतार्थ सङ्ग्रह गाथा शरणागति गाथा द्वादश नाम गाथा द्वय गाथा
मूल मन्त्र गाथा चरमश्लोक सङ्ग्रह गाथा आहार नियम गाथा घुटि गाथा
कुबेराक्षी गाथा कन्तुक गाथा परिहास गाथा डोळा गाथा नवरत्न माला प्रबन्ध
साराद्यनेक दिव्य प्रबन्ध निर्माण परितोषित वरद प्रसाद लब्ध वरगुण भूषित
वरदाचार्य सत्पुत्र

सापराध लक्ष्मणार्य दुर्वर्ण सुवर्ण करण प्रकटिताघटित घटना सामर्थ्य

ब्रह्म तन्त्र स्वतन्त्र योगि प्रभाकर योगि नवनीतनर्तक योगि वरदाचार्य
रामानुजाचार्य प्रभृति सच्छिष्योपदिष्ट त्रय्यन्तयुगळ सारसारादि
सद्रहस्य जात

सुदर्शन सूरि विरचित श्रुत प्रकाशिका परिरक्षण परिशोधन प्रतिपादन
परि वृढ

यतिपति परिचित यादवाचल वासि नारयण चरणाम्बुज सेवा संहृष्ट
मानस

स्वनिर्मितातिशयितानन्त दिव्य प्रबन्ध प्रवर्तन रसभर नीत शत संवत्सर

सरसिज सदृश चरण युगळ

सितान्तरीय शोभमान कटितट

व्याख्यामुद्रा पुस्तक भूषण भूषित करद्वय

विमलोपवीत सूत्तरीय तुलसी नळिनाक्ष माला विराजित विशाल वक्षः स्थल

पूर्णेन्दु समवदन

लसदूर्ध्व पुण्ड्र

दिनकर सन्निभ दिव्य मङ्गळ विग्रहोज्वल

श्री रङ्ग नाथ पदकमल निरन्तरानुभव
निरतिशयानन्द परिपूर्ण मनो रथ

विशुध्द विद्या विभूषण

विबुध जन नाथ

वेङ्कट नाथ

मम नाथ

नमस्ते नमस्ते नमः

नमः पद्माक्ष पौत्राय नमोऽनन्तार्य सूनवे ।
नमो वरद नाथाय वेदान्ताचार्य सूरये ॥

निर्मितं वेङ्कटेशेन वेदान्ताचार्य वैभवम् ।
सङ्कीर्त्येत् प्रतिदिनं वेदान्ताचार्य भक्तिमान् ॥